जीवन में कविता का जादू

-गगन गिल

मुझे खुशी है कि आज मुझे आप सबके साथ इस सम्मेलन में शामिल होने का मौका मिला। बहुत दिनों बाद ऐसा संयोग बना कि मैं कविता के साथ अपने अनुराग के बारे में सोचूँ। कैसे उसने मेरे जीवन को धीरे-धीरे इतना रंग दिया कि बाकी सब रंग धुल गये, समय के साथ, कविता फिर भी बची रही।

तो क्या हम कविता के जादू के बारे में बात करें, जो वह हमारे जीवन में बिखेरती है?

आप यह भूल जाइये कुछ समय के लिए, कि आप जानना चाहते हैं, कविता कैसे लिखी जाती है। मैं भूल जाती हूँ कि कभी-कभी कोई उड़ती जाती कविता मैं पकड़ लेती हूँ।

अगर आप सोचते हैं, सिर्फ़ कुछ चीज़ें लिख जाने से, छपा लेने से, एक लेखक के पास कोई कुंजी मिलेगी, और वह आपको दे देगा, तो आप गलती पर हैं। दुनिया में, हमारे दिल में, हमारी जिज्ञासा में ताले इतने ज़्यादा हैं, कुंजियाँ बहुत कम। बेचारे लेखक को भी हर रोज़ अपनी चाबी ढूँढ़नी पड़ती है। ज़्यादातर तो वह बंद दरवाज़े के आगे ही खड़ा होता है। खाली कागज़ के सामने एक शुरुआत की प्रतीक्षा करता। शब्दों का भिखारी।

हम ताले-चाबी की बात नहीं करेंगे। जीवन में कविता के जादू की बात करेंगे।

यह जो जीवन हमें मिला है, आज की सुबह मिली है, कुछ शब्द मिले हैं, चुप्पी मिली है, क्या इसका अर्थ हम समझते हैं? क्या हम मिल कर इस सब की बात करें?

मैं अट्ठारह-उन्नीस बरस के इतने सारे चमकीले युवा दिलों के बीच में खड़ी हूँ। बहुत अच्छा लग रहा है। वसंत ऋतु की इस सुबह ने थोड़ा सा मुझे भी युवा कर दिया है। फिर आज शिवरात्रि है। आकाश में शंकर-पार्वती के विवाह की तैयारी है। उस दैवी बारात का कोई गण आपके या मेरे दिल में कभी झुनझुना बजा कर भाग जाता है। क्या आपने उसे सुना?

मैं ऐसा क्या कहूँ आपसे, कि यह सुंदर दिन थोड़ा और सुंदर हो जाये? धूप थोड़ी और खिल जाये, शब्द थोड़ा और गुंजायमान हो जाये, सांस थोड़ा और लम्बा-गहरा हो जाये?

क्या ऐसा नहीं हो सकता कि आपके और मेरे बीच शब्द हो ही नहीं और कोई जादू खिल जाये? कविता का जादू? मौन का जादू? हम सबके यहाँ एक साथ होने का जादू।

हमारे आदि देवता, शिव शम्भु, जो संसार में शब्द लेकर आए, ध्वनि और ताल लेकर आए, कि प्रकृति के सब जीव-जंतु आपस में संभाषण कर सकें, अकेलेपन से मुक्ति पा सकें, अपने होने को कुछ अर्थ दे सकें।

सबसे पहले उन्हें प्रणाम। फिर देवी पार्वती को, जिन्होंने उनका सब शोक हरा। उनके शोक खाये हृदय को संसार में वापस रमाने के लिए घोर तपस्या की।

*

तो, शुरू से शुरू करें? यह कविता तो आपने नर्सरी में ज़रूर सीखी होगी?

Twinkle, twinkle, little star
How I wonder what you are!

क्या आपको पता है कि आपके जीवन में कविता के जादू की बात इतने छुटपन में शुरु हो चुकी थी?

है न सुंदर? बात भी, भाव भी, जिज्ञासा भी।

सितारा है कि पूरी कविता में कुछ बोलता नहीं! बताता ही नहीं, कौन है वह।

छोटा सा बच्चा पूछ रहा है सितारे से, कौन हो तुम? कौन हो तुम?

ज़ाहिर है, इससे पहले बच्चे ने ऐसा कुछ कहीं देखा नहीं, न इतना पास, न इतना दूर। ऐसा झिलमिल झिलमिल।

अब दूसरी कविता। हमारे उन्हीं बचपन के दिनों की-

हरा समुंदर गोपी चंदर
बोल मेरी मछली, कितना पानी?
इतना पानी!

सितारा नहीं बोला था उस कविता में, लेकिन इसमें मछली बोलती है वापस बच्चे से - *'इतना पानी'!*

बताती है, पहले घुटने तक था, फिर पेट तक, छाती तक, गर्दन तक, सिर के ऊपर तक।

हम क्यों पूछ रहे हैं उससे, क्या हमें नहीं पता, दिख नहीं रहा हमें, कितना पानी?

और मछली? वह मस्ती कर रही है, बता रही है - *इतना पानी, इतना पानी!*

इसी खेल में खेल है, भाषा का, कविता का, जीवन का। गुड़िया भीतर गुड़िया।

कितना पानी?

क्योंकि आप और हम पानी के बाहर हैं। उस पदार्थ की छुअन से परे हैं, जिसने उसे चारों ओर से घेरा हुआ है। हम जानना चाहते हैं, कितने तक छुए हमें पानी, तो क्या होगा हमारे जीवन को? हमारी देह को? हमारे होने को।

मछली उत्तर दे रही है, तैर रही है इधर से उधर। हर बार कहती है, 'इतना पानी', लेकिन भेद नहीं खोल रही अपना।

हम सब ने उससे पूछा। अलग-अलग पीढ़ियों ने - *बोल मेरी मछली, कितना पानी?* उसने भेद नहीं खोला।

यह हमारा पहला सबक होना चाहिए।

कविता अपना भेद नहीं खोलती। बताती नहीं। सिर्फ़ इशारा करती है, उस तरफ़, जहाँ संभव है, भेद छिपा पड़ा हो!

कबीर हों, फ़रीद हों, मीरा हों, टैगोर हों, उनकी कोई पंक्ति उठा लीजिए, सीधी-सादी सी लगेगी, दोबारा पढ़िए, उसने मोती दिखला कर अपनी सीपी बंद कर ली है।

सीपी में मोती खनक रहा है, आपको मालूम है, आपने एक झलक उसे देखा भी था, लेकिन निकलेगा कब अपने ढक्कन में से?

कोशिश करते रहिए। बार-बार जन्म ले लीजिए, कविता का फिसलता मोती हाथ नहीं आने वाला। झलक ज़रूर कौंधती रहेगी। एक पूरी सभ्यता बन जायेगी - उत्तर-आकुलों की। कोई पा गया हो कबीर का भेद, फ़रीद का भेद, मीरा का भेद, दिल का भेद - बता दीजिए इस व्याकुल-सभा में!

भेद पाने के लिए ही हम बार-बार लौटते हैं कविता के पास। इस बेचैनी से ही हमारे मानस बनते हैं। काल से हमारी होड़ लगती है। जो अदृश्य है, वह हमारे मानस में उपस्थित होता है, आकार लेता है। हम अज्ञात से संवाद करते हैं। इस सब से ही हमारी परंपरा, हमारी सभ्यता बनती है।

इतने बड़े हमारे मनीषी आनंद कुमारस्वामी कह गये हैं - कवियों के बनाने से ही देश बनते हैं, सभ्यताएं बनती हैं! क्यों? क्योंकि कवि जिस पैनेपन से बात करते हैं, अपने देश-काल से, कोई दूसरी विचारात्मक मेधा नहीं।

सो दूसरी बात हमें यह समझ लेनी चाहिए कि कविता कुछ कहती तो है, लेकिन कथन में नहीं।

भाषा के जल में वह सांस भले ले ले, उसकी जकड़ से बाहर होने के लिए सतह पर आएगी। आपके-मेरे मौन में। ज़रूर।

*

आप यह न सोचें कि आपको कविता ढूँढनी है। पढ़नी है।

बहुत सारी कविताएं भी आपको ढूँढ़ रही हैं, ठीक इसी क्षण, जब मैं बोल रही हूँ, आप सुन रहे हैं।

अपने मन को ज़रा ध्यान से देखिये। क्या वहाँ कोई पंक्ति चल रही है? गुनगुना रही है? दोहरा रही है?

आप अपने जीवन में उसे सुन सकें, कभी ज्यादा, कभी कम, क्या आप इसकी तैयारी कर सकते हैं?

अपनी दिनचर्या की भगदड़ में, ट्रेन बदलते हुए, एक क्लास से दूसरी क्लास में जाते हुए, स्टेशन पर खड़े हुए, नहाते हुए, थोड़ा सा अवकाश कविता के लिए छोड़ सकते हैं? कि ऊपर-ऊपर से आप वे सब काम करते रहें, और भीतर एक पंक्ति चलती रहे?

क्या आप अपने से बात करना सीख सकते हैं? कविता लिखने के लिए पहले अपने भीतर उसके लिए जगह बनानी होगी। बहुत सारी कविताओं के साथ जीना-मरना होगा। क्या आप यह कर सकते हैं? अपने से बात करना?

एक बार आपने बोलना सीखा था दो-ढाई साल की उम्र में। दोबारा, इस नाज़ुक कच्ची-पक्की उम्र में, जब सूरज चमक रहा है ऐसा सुंदर, हवा बह रही है मद्धिम-मद्धिम, क्या आप सीख सकते हैं बात करना अपने से, अकेले में?

देख लीजिए, अभी नहीं करेंगे तो बुढ़ापे में करनी पड़ेगी अपने से बात। जब तक बात नहीं करेंगे, छुट्टी नहीं मिलने वाली अपने आप से। तो अभी से क्यों न शुरु कर दें?

विश्वास करिये, कविता आपको कभी निराश नहीं करेगी, साहित्य, कला, संगीत और सिनेमा भी नहीं।

संसार से बच निकलना, इसकी जकड़ से, इसके गोरख-धंधे से, वह हम में से किसी के बस का नहीं। कोई न कोई जंज़ीर हमें बाँधेगी ही। पढ़ाई पूरी होगी, तो कम्पीटीशन शुरु होगा, नौकरी के इंटरव्यू होंगे, आते-जाते किसी एक के लिए दिल भी धड़केगा, प्रेम में बाकी सब भूलेगा। प्रकृति का नियम है यह।

अगर आप समय रहते अपने से बात करना सीख लें, तो बाद में खालीपन नहीं लगेगा। ऐसा नहीं लगेगा, किसी व्यस्त सफल जीवन के बीचोंबीच, जैसा मुझे लगा था, अरे जीवन तो मैंने जिया ही नहीं। फिर आपको सबकुछ छोड़ कर अपने बीते जीवन को पकड़ने की ज़रूरत नहीं होगी।

मैंने ऐसा नहीं किया था, मुझे किसी ने बताया ही नहीं, अभी तक देख लीजिए, जो मुझसे छूट गया, पकड़ा नहीं जा रहा। और दिन हैं जीवन के, कि खत्म होते जा रहे हैं!

*

अब नहीं तो कब?

यह सवाल आपके साथ हमेशा रहना चाहिए। जीवन जीने की प्यास लगातार बढ़ती रहनी चाहिए। आपकी प्यास को जल कहाँ से मिल सकता है, इसका ठीक-ठीक अनुमान आपको होना चाहिए। अभी, बिलकुल अभी।

अकसर युवाओं को लगता है, अभी समय पड़ा है, थोड़ा अभी जी लेते हैं, थोड़ा बाद में जी लेंगे। ऐसी गलती मत करियेगा। अगले बरस दर्पण में यह चेहरा नहीं मिलने वाला। मित्रो ! पकड़ो दौड़ कर समय को। Seize the day, seize the day!

कैसे पकड़ें भई? पैर के नीचे रेत को, लहर को कैसे थिर करें?

पढिये, सुनिये, देखिये।

भर लीजिए अपने भीतर किताबों का संसार, फ़िल्मों का, संगीत और नाटक का। कविता लिखने मत बैठ जाइये। वह भी आयेगी। उसके लिए धीरज रखें। आ ही जाये तो लिख लें, लेकिन याद रखें, एक ठीक-ठाक कविता आने से पहले पाँच सौ-एक हज़ार बुरी कविताएं आयेंगी। कोई और नहीं फिंकवायेगा। चार दिन बाद आप देखेंगे अपनी कारगुज़ारी, तो खुद ही फेंक देंगे रद्दी में। हर कविता के पीछे रद्दी के बड़े-बड़े टोकरे पड़े होते हैं। इसकी पहचान जितनी जल्दी हो जाये, उतना अच्छा।

अभी डायरी लिखिए। कुछ दिन बाद खुद उसे चेक करिये। अपना टीचर बन कर। इतने दिनों में ऐसे ही जी सकते थे आप, या थोड़ा और ज़्यादा?

जैसे-जैसे आपको अनुमान होता जायेगा, इस दिन में थोड़ा यह भी कर सकते थे, इसे भी अँटा सकते थे, आपके भीतर की दुनिया का परिष्कार होता जाएगा। पढ़ डालिये अच्छी-बुरी जो भी कविता-कहानी आपको बुलाती है, देख डालिए अच्छा-बुरा सिनेमा, संगीत। कर डालिये दोस्तों से दुनिया भर की बातें।

धीरे-धीरे मैल बैठ जाएगी।

एक दिन न आपसे बुरी किताब पढ़ी जायेगी, न बुरा संगीत या सिनेमा सहा जायेगा।

अगर आपके आसपास किसी की अभिरुचि स्थूल है, तो इसका मतलब केवल इतना है कि उसने पूरा पढ़ा नहीं, डूब कर देखा नहीं, तैरने के लिए नीचे तक गया नहीं। ऊपर-ऊपर खड़े रहेंगे तो तैर नहीं पायेंगे। तैरेंगे नहीं, तो न मोती दिखेंगे, न मछलियाँ।

क्या ऐसा जीवन स्वीकार है आपको, जिसमें न मोती हैं, न मछलियाँ? दावत नहीं खायेंगे आप इस जीवन की, जो आपको मिला है?

वसुधा जी का, अपनी वाइस चांसलर का, चेहरा ज़रा देखिए। डरिये नहीं उनसे, देखिये। कुछ दिखता है उसमें? कितने सारे आंतरिक जीवन उसमें चल रहे हैं, पता चलता है कुछ?

ऐसा ही जीवन आपको होना है। बाहरी नहीं, आंतरिक। बाहर से आप कुछ भी करते रहें, कम्प्यूटर, बैंकिंग,

अध्यापन, भीतर एक दूसरा जीवन सदा क्रियाशील रहना चाहिए।

मैंने वसुधा जी का उदाहरण इसलिए दिया कि उन्हीं को इस सभा में मैं थोड़ा-बहुत जानती हूँ। दिल्ली में मेरी एक किताब पर कार्यक्रम बनवाया था उन्होंने। उन्हीं दिनों मैंने उनकी आंतरिकता की झलक पायी थी। भारतीय मनीषा पर उनकी गहरी पकड़ की। यह आपके जीवन में किस तरह बने, इस पर ध्यान देना है आपको।

आपकी वाइस चांसलर ने आपके लिए तीन दिन का यह सम्मेलन किया है। पहली बार। विद्यार्थिनी साहित्य सम्मेलन। कोर्स के अंक बढ़वाने के लिए नहीं। आपकी किसी नौकरी की तैयारी के लिए नहीं। जीवन के एक बहुत बड़े साक्षात्कार की तैयारी के लिए। नियति से मुठभेड़ के लिए। कि आप जीवन से टकराएं तो खाली हाथ न लौट आएं, इसके लिए।

इसकी पहचान आप कर लीजिए।

महर्षि कर्वे को भी याद करिये। पाँच महिलाओं के साथ उन्होंने यह यज्ञ शुरु किया था, महिलाओं का प्रज्ञा-यज्ञ, अब सैंकड़ों की संख्या में हम यहाँ बैठे हैं। उन्होंने सामाजिक संघर्ष की चिंता से निपटने के लिए आरंभ किया था यज्ञ। आज उनकी साधना के कारण इतना अवकाश हमें मिल गया है, कि हम बाहरी संघर्ष की बजाय अपने आंतरिक आलोक की बात कर पा रहे हैं।

इन तीन दिनों के सम्मेलन में यदि तीन व्यक्तियों के भीतर भी कल्पनाशीलता अपनी विलक्षणता में जागृत होती है, झंकृत होती है, तो यह सफ़ल है। इसका कुछ अहसास है आपको ?

भविष्य में, जब कभी आप अपनी संतानों में कल्पनाशीलता जगाने का कोई प्रयास करेंगे, उनके लिए कोई निर्णय करेंगे, तब आपको इस सुबह का महत्व याद आएगा।

जब कहती हूँ कि ठीक से देख लीजिए अपने गुरु का चेहरा, इस सुबह कैसा सात्विक, तो इसलिए कि किसी दिन भविष्य में, अचानक यह याद आएगा। कृतज्ञता के किसी क्षण में। आप सोच भी नहीं रहे होंगे और कृतज्ञ हो जायेंगे!

मैं अभी तक अपने टीचर्स को याद करके विह्वल हो जाती हूँ। अनुभव से कह रही हूँ।

*

तो वापस कविता पर आते हैं। उससे हमारा संबंध कैसे बने, इस पर।

डरिये नहीं। बुरी कविता क्या है, यह दो-चार कवि पढ़ कर आपको समझ में आ जाएगा। बुरी कहानियों की तरह बुरी कविता आपसे छल नहीं करती। बुरी कथाएं धोखे में पढ़ी जाती हैं। वे आपको लटकाये रखती हैं, अब कुछ होगा, होगा।

कविता छल नहीं करती। उसमें रहस्य और सत्य, आश्चर्य और स्वप्न का उछाल एक साथ होना ही होना है।

बुरे कवि के हाथों उसकी गेंद गिरने के लिए एक-दो वाक्य काफ़ी हैं। शुरु की तीन पंक्तियों से ही उसका सच-झूठ आपकी पकड़ में आ जायेगा।

कल्पना कीजिए, सिर्फ़ दो-तीन पंक्तियों में! इससे कहीं ज़्यादा समय तो बुरे प्रेम में से निकलने में लग जाता है।

कविता पढ़ने का एक वरदान यह है कि बुरी होगी तो तुरंत छूट जायेगी। अच्छी होगी, तो जीवन भर साथ चलेगी। अकेले में बातें करेगी आपसे। मुश्किल दिन आएंगे तो तकिये का काम करेगी। बुरे दिनों से कोई किसी को बचा नहीं सकता, कम से कम कविता के तकिये का इंतज़ाम तो कर लीजिए!

क्या कविता हमें कोई सत्य दे देगी?

जी हाँ, बिलकुल। दार्शनिकों वाला रूखा-सूखा सत्य नहीं, दिल पर मलहम लगाने वाला सत्य।

कविता का सच कभी रूढ़ नहीं होगा। एकअर्थी नहीं होगा। यह आपका अतिरिक्त बोनस है। पंक्ति एक ही रहेगी, रंग कई-कई खुलेंगे। जैसा दिन, वैसा फूल। कभी लाल, कभी जामुनी। बड़ी बात यह कि इस फूल को देखने के लिए आपने कोई पानी नहीं दिया। दिल के एक कोने में रख छोड़ा। जब चाहा देख लिया। कभी ये, कभी वो!

बस एक चेतावनी। आप साहित्य के पास कहीं यथार्थ को समझने तो नहीं जा रहे?

उसके लिए वहाँ न जाइएगा। कुछ नहीं हाथ आने वाला।

दरअसल यथार्थ नाम की कोई चीज़ है ही नहीं। सब कुछ इतनी तेज़ी से घूम रहा है कि माया को मानना ही पड़ेगा। आप जो कोर्स पढ़ रहे हैं, वह आपके जीवन में सबसे ज़्यादा मायावी सिद्ध होगा! भविष्य के किसी सुदूर क्षण आपको लगेगा, कोर्स में नहीं, इन तीन दिनों में आपने जो सीखा था, साहित्य और उसकी आंतरिकता के बारे में, उसी का सबसे ज़्यादा महत्व था आपके लिए।

हमारे यहाँ कुछ तथाकथित श्रेणियाँ हैं साहित्य में। प्रगतिशीलों की, सामाजिक चेतना की। मुझे वे कभी समझ में नहीं आईं। हम यथार्थ से चारों ओर से वैसे ही इतना जकड़े हुए हैं, उससे दूर नहीं जायेंगे, तो उसे समझेंगे कैसे?

'दूर से अपना घर देखना चाहिए' - हमारे कवि विनोदकुमार शुक्ल कहते हैं। सुनिये उनकी कविता -

दूर से अपना घर देखना चाहिए
मजबूरी में न लौट सकने वाली दूरी से अपना घर
कभी लौट सकेंगे की पूरी आशा में
सात समुंदर पार चले जाना चाहिए
जाते-जाते पलट कर देखना चाहिए
दूसरे देश से अपना देश

अंतरिक्ष से अपनी पृथ्वी

तब घर में बच्चे क्या करते होंगे की याद
पृथ्वी में बच्चे क्या करते होंगे की होगी
घर में अन्न-जल होगा कि नहीं की चिंता
पृथ्वी में अन्न जल की चिंता होगी
पृथ्वी में कोई भूखा
घर में भूखा जैसा होगा
और पृथ्वी की तरफ़ लौटना
घर की तरफ़ लौटने जैसा।

अब देखिये कविता के यथार्थ में रहस्य का टप्पा -

घर का हिसाब-किताब इतना गड़बड़ है
कि थोड़ी दूर पैदल जाकर घर की तरफ़ लौटता हूँ
जैसे पृथ्वी की तरफ़।

यह है कविता का यथार्थ में सेंध लगाना। उसकी जकड़ से आपको मुक्त करना। उसके अंधेरे कुएं में आपको गोता लगवाना।

कविता का सत्य उसके शब्दों में नहीं मिलेगा। जो उसने नहीं कहा, अधूरा छोड़ दिया कुछ कहते-कहते, वहाँ कोई टुकड़ा आपकी पकड़ में आ जाये तो आ जाये। इतना तो समझ गये होंगे आप?
*

अब कविता के सरोवर किनारे आप आएंगे, तो कुछ न कुछ यथार्थ का कीचड़ आप पर लग ही जायेगा। चप्पल पर, पैर पर। हो सकता है, एक-आध छींटा आत्मा पर भी आ जाये साथ!

ज़रूरी नहीं, सरोवर सब मैल धो ही दे। संभव है, वह आपको जल ही न छूने दे। आप कहें, प्यास लगी है और वह कहे, पहले मेरे प्रश्नों का उत्तर दो। *सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है संसार में?*

बेशक इसका उत्तर युधिष्ठिर दे गये हैं महाभारत में, लेकिन अगर आप समझें कि आप भी उसी उत्तर को रटा-रटाया कह देंगे और आपको प्यास बुझाने के लिए कविता से जल मिल जायेगा तो गलती करेंगे।

कविता का सरोवर आपको मूर्च्छा देकर दंडित नहीं करेगा। यदि आप वहाँ अपनी प्रज्ञा से चल कर नहीं गये, तो वह आपकी प्यास बढ़ा देगा, आपके पानी को नमकीन कर देगा।

कविता ही एकमात्र ऐसा इलाका है, हमारी प्रज्ञा की परीक्षा का - कि वहाँ प्रश्नपत्र भले एक सा रहा आया हो वर्षों से, शताब्दियों से - उत्तर उसका अलग होगा। हर व्यक्ति के लिए अलग।

हर व्यक्ति को बताना होगा, उसने क्या समझा। यह जीवन जो उसे मिला था, इसके इतने सारे सुनहरे दिन,

कुछ मैले दुखियारे दिन भी, उसने जो देखे थे - उससे क्या जाना? सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है संसार में?

How I wonder what you are, My heart, My heart!

*

कविता हमारी सामूहिक स्मृति में कैसे जाती होगी? अपने रचयिता की छाप से? अपनी आकुलता की छाप से?

मैंने जो बाल-कविताओं के उदाहरण दिये, हमें पता भी नहीं, उनके कवि कौन हैं। लेकिन उन पंक्तियों के कौतुक ने हमें स्पंदित किया है, पीढ़ी दर पीढ़ी।

तो क्या हम कह सकते हैं, कवि का हस्ताक्षर भाषा में नहीं, कौतुक जगाने के उसके कमाल में रहता है?

एक जादू बनता है संसार में, तो कई सारी चेतनाएं उसमें अपनी छोटी-मोटी कल्पनाएं बांधने लगती हैं। महाभारत विह्वल करता है हमें, मीरा, कबीर, होमर की ओडेसी - सबमें हमारी जाति की सामूहिक चेतना प्रक्षिप्त हो जाती है। जैसे एक ही गान, एक ही हूक कई अलग-अलग दिलों से एक साथ निकली हो।

असल मीरा को नकल मीरा से, असल कबीर को नकल कबीर से, असल महादेवी अक्का को नकल महादेवी अक्का से अलग करने का काम करना पड़ता है विद्वानों को।

कौन बड़ा कवि है? जिसकी नकल, जिसके सुर में सुर मिला कर साधारण जन अपनी तुकें जोड़ देते हैं? कि वह, जो इतना अनूठा है, नियति के एकांत को संबोधित, कि उसके जैसी पुकार कविता में ला पाना असंभव है?

एक पाठक के नाते इस बहस में मेरी ज़रा भी दिलचस्पी नहीं।

मुझे कवि का नाम नहीं, कविता की एक पंक्ति चाहिए, जिसके साथ मैं जी सकूँ। पूरी कविता भी नहीं, बस एक सूक्त-वाक्य। ये और बात है कि उस सूक्त-वाक्य में कवि का बिंधा हुआ दिल अपने आप आ जायेगा, न उसे अलग हटाने की ज़रूरत होगी, न अलग से देखने की।

जब जीवन मुझे स्तब्ध कर रहा हो, जब शब्द मेरे काम न आ रहा हो, तो कोई पंक्ति कहीं से आए और मुझे सहारा दे दे। मैं उसके साथ टिक कर बैठ जाऊँ, जैसे वह कोई दीवार हो, किसी अदृश्य प्रिय का कंधा हो।

अगर एक कविता ने मेरे लिए इतना काम कर दिया, तो बहुत काफ़ी है। मनुष्य द्वारा आविष्कृत चीज़ों में ऐसी कितनी हैं, जो हमें एक सांस और उधार दे सकें, अच्छी कविता, अच्छे संगीत और सुंदर प्रार्थनाओं को छोड़ कर?

कविता की बात करूँ और उन पंक्तियों को न सुनाऊँ, जिन्हें जाने कितनी बार मैंने ओढा है, बिछाया है, तो ये मेरी अकृतज्ञता होगी। ईश्वर ही जानता है, मनुष्यता की कितनी कठिन रातें, जब प्रार्थना से भी न कटीं, तो कविता से कटीं। इतना आश्वासन हमें कविता ने दिया है!

मैं जान-बूझ कर भारतीय कविता से कम और विश्व कवियों से ज़्यादा पढ़ूँगी, ताकि उन नामों से भी आपका परिचय हो सके।

तो सुनिये मेरी प्रिय कवियत्री, मारीना स्वेताएवा, मॉस्को की बर्फ़ में चली जातीं -

क्या करूँगी यहाँ मैं
अंधी और अनाथ
हर कोई देख सकता है यहाँ
हर किसी के पास पिता है

और यह दूसरी कविता _

एक चुम्बन सिर पर, पोंछ देता है सारा दुख
मैं चूमती हूँ तुम्हारा सिर
एक चुम्बन आँखों पर, हर लेता है सारी उनींद
मैं चूमती हूँ तुम्हारी आँखें

एक चुम्बन होंठों पर, बुझा देता है गहरी पैठी प्यास
मैं चूमती हूँ तुम्हारे होंठ

एक चुम्बन सिर पर, पोंछ देता है स्मृति
मैं चूमती हूँ तुम्हारा सिर

क्या आपको इनमें कोई अंधियारी नियति दिखती है?

नहीं न? कुछ पता चलता है कि एक दिन ये स्वेताएवा आत्महत्या कर लेंगी, स्तालिन के दमन से तंग आकर?

कविता के अंधेरे में ही उसका उजाला छिपा है, यह बात भी आपको समझ लेनी है। कभी आप स्वयं किसी सुरंग में हों, तलघर में हों, तो डरना नहीं है। इतना काम कविता हमेशा से करती आई है। नाज़िम हिकमत को पढ़ जाइए। उनकी जेल में लिखी कविताओं को। उनकी एक कविता है, I come and stand at every door -

I come and stand at every door

But no one hears my silent tread

I knock and yet remain unseen

For I am dead, for I am dead.

I'm only seven although I died

In Hiroshima long ago

I'm seven now as I was then

When children die they do not grow.

My hair was scorched by swirling flame

My eyes grew dim, my eyes grew blind

Death came and turned my bones to dust

And that was scattered by the wind.

I need no fruit, I need no rice

I need no sweet, nor even bread

I ask for nothing for myself

For I am dead, for I am dead.

All that I ask is that for peace

You fight today, you fight today

So that the children of this world

May live and grow and laugh and play.

और ये रहे हमारे गुरुदेव, कैसा प्रेम करके वह गये इस विश्व से, इसकी प्रकृति से, इसके छोटे-बड़े मनुष्य से। कुछ भी पढ़ लीजिए उनका, रोमांच हो आता है। इतना सारा कोई जी सकता है? अपना एक-एक रोम? हर्ष-शोक सब-कुछ का ऐसा सुंदर स्वीकार।

आया था मैं चुनने को फूल यहाँ वन में
जाने था क्या मेरे मन में
यह तो, पर नहीं,फूल चुनना
जानूँ न मन ने क्या शुरु किया बुनना
जल मेरी आँखों से छलका
उमड़ उठा कुछ तो इस मन में

आमि आँधार बिछाये आछि रातेर आकाशे तोमारि आश्वासे...
मैंने अंधेरा बिछाया है रात के आकाश में, तुम्हारे आश्वासन से...

This song of mine will wind its music around you,
my child, like the fond arms of love.

The song of mine will touch your forehead
like a kiss of blessing.

When you are alone it will sit by your side and
whisper in your ear, when you are in the crowd
it will fence you about with aloofness.

My song will be like a pair of wings to your dreams,
it will transport your heart to the verge of the unknown.

It will be like the faithful star overhead
when dark night is over your road.

My song will sit in the pupils of your eyes,
and will carry your sight into the heart of things.

And when my voice is silenced in death,
my song will speak in your living heart.

और रिल्के -

Tonight I want to step out of my heart
And walk under the stars...

और बिलकुल नग्न, केवल केशों से ढँकी, दर-दर भटकतीं तेरहवीं शताब्दी की भक्त कवियत्री अक्का महादेवी -

भेजो मुझे दर-दर
हाथ फ़ैलाये भीख माँगने को
और अगर भीख माँगूँ
तो मत देने देना उन्हें
और अगर वे दें
तो गिरा देना ज़मीन पर
और अगर गिर पड़े
तो मेरे उठाने से पहले ले जाने देना उसे कुत्ते को
ओ मल्लिकार्जुन...
हर कविता में पुकारती हैं, अपने शिव को! चलती-चलती एक पहाड़ की शिला में समा गयी थीं। कर्नाटक में

समाधि स्थल है उनका।

और अख़्मातोवा, जिनके लिए स्तालिन ने कहा था, 'she is half nun, half whore!' -
I could not go to sleep
because you were dreaming of me...

और लोर्का, स्पेन के बहुत बड़े कवि, जिनकी गोली लगी लाश एक नाले में पड़ी मिली थी, स्पेन के गुरिल्ला युद्ध के दिनों में। विडंबना देखिये कि लोर्का की कई कविताएं डूबे हुए लोगों, उनकी लाशों के विवरण से भरी हैं और वे स्वयं ऐसी ही एक जगह पर फिंके मिले -

I saw myself in your eyes
& thinking about your soul
O oleander white

I saw myself in your eyes
& thinking about your mouth
O Oleander red.

I saw myself in your eyes
but saw that you were dead
O Oleander black.

और गैब्रिएला मिस्त्राल, चिली की बहुत बड़ी कवियत्री, नोबल पुरस्कृत -

The bones of the dead are tender ice
that knows how to crumble
and become dust on the lips
of the ones who loved them
and these lips can no longer kiss.

The bones of the dead
can do more than living flesh
Even disjointed, they make mighty chains
keeping us submissive and captive

और बॉदलेयर, जिनकी सब कविताओं में शैतान और ईश्वर का द्वंद्व मिलता है -

Angel of gaiety, have you tasted grief?
Shame and remorse and sobs and weary spite
And the vague terrors of the fearful night
That crush the heart like a crumpled leaf?
Angel of gaiety, have you tasted grief?

Angel of health, did you ever know pain
which like an exile trails his tired footfalls
the cold length of the white infirmary walls
with lips compressed, seeking the sun in vain?
Angel of health, did ever you know pain?

Angel of beauty, do you wrinkles know?
Know you the fear of age, the torment vile
of reading secret horror in the smile
of eyes your eyes have loved since long ago?
Angel of beauty, do you wrinkles know?

और अंत में रोबर्तो हुआरोज़, अर्जेंटीना के प्रमुख कवि, जो भारत भवन के न्योते पर 1989 में भारत आए थे और पहली बार हमने उनके मुख से 'वर्टिकल पोएट्री' सुनी थी -

To die, but far away
Not here
where everything is crooked, conspiracy of life,
including other deaths

To die, but far away
Not here
where dying is already a betrayal
a greater betrayal than elsewhere

To die far away,
not here
where everyone of us sleeps
always in the same place
even though we always wake somewhere else

To die far away
not here
To die where no one waits for us
where there is a place to die

इतनी सारी कविताओं और कितनी ही औरों को आपके भीतर बसने के लिए जगह चाहिए होगी, तब कोई एक अधूरी सी पंक्ति, आपकी अपनी, पाँच सौ-एक हज़ार रद्दी कविताओं के बाद, धीरे से ठक-ठक करेगी आपके दिल पर। कान में कुछ कहेगी। तब जाकर बात बनेगी, कभी न भी बनेगी।

उस कमज़ोर सी आवाज़ को, नितांत अपनी एक आवाज़ को, कविता में आप सुन सकें, इतना एकांत अपने भीतर इकट्ठा कर सकेंगे आप? अपने आप से बातें करते हुए डरेंगे तो नहीं?

अगर आप कर सके तो सारी ज़मीन कविता की आपकी है। नहीं तो, आसमान तो है ही। जो भी कविता आपको छुएगी, उसकी पंक्ति जीवन भर आपके साथ चलने वाली है। अभी ही आप कितनी पंक्तियाँ अपने भीतर छिपाये बैठे हैं यहाँ पर। मैंने पूछा भी था, आप सुन पा रहे हैं उनको? बोल रही हैं आपके भीतर।

तो बताइये, कविता की जादुई इस यात्रा के लिए तैयार हैं आप?

27 फ़रवरी, 2014